Vol 6 Issue 6 Dec 2016
ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT **Golden Research Thoughts**

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में आम जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण

कृष्णा कुमारी शर्मा[1] , डॉ. देवेन्द्र कुमार गुप्ता[2]
[1]शोध छात्रा , हिन्दी विभाग , वनस्थली विद्यापीठ (राज.)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश.

सारांश
दुष्यंत कुमार सामाजिक सरोकारों के कवि रहे हैं। आम आदमी के जीवन में आने वाली तकलीफों, उत्तार–चढ़ाव, गरीबी के दर्द को न केवल उन्होंने झेला बल्कि उस पीड़ा को पूरी शिद्दत से महसूस भी किया। फलतः आम आदमी के दर्द व पीड़ा उन्होंने अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया। दुष्यन्त कुमार ने अपने साहित्य में आम आदमी के जीवन की वास्तविकता का सटीक चित्रण प्रस्तुत किया है। यहाँ आम आदमी को दैनिक व निम्नतम स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी साधन एवं संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। दिन–रात मेहनत करने वाला आम आदमी व गरीब व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं व वस्तुओं की पूर्ति भी मुश्किल से कर पाता है। नितान्त अभावों में जीवन–यापन करने की विवशता पर प्राकृतिक आपदाओं या मौसमी बदलावों की मार कोढ़ में खाज का काम करती है। दुष्यन्त कुमार ने सामन्ती शोषण के शिकार मजदूर वर्ग के जीवन की विवशता व लाचारी का वास्तविक चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है।

प्रयुक्त शब्दावली : दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें, आम जीवन, आम आदमी, जीवन की वास्तविकता

प्रस्तावना :
साहित्य समसामयिक समाज का दर्पण होता है उसमें एक ओर तो व्यक्ति की भावनाओं को मूर्त रूप मिलता है, वहीं दूसरी ओर युग धर्म भी झांकता दिखाई देता है और उसमें समाज का यथार्थ प्रस्तुत होता है। साहित्य में युग की आत्मा का चित्रण हो, तभी वह

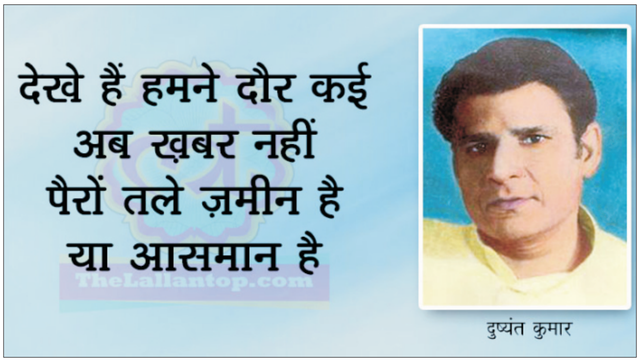

स्थायी साहित्य होता है। साहित्यकार अपने युग की उपज होता है। उस युग की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, परिस्थितियाँ उसके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। दुष्यन्त जी का व्यक्तित्व जीवन के प्रत्येक रंग से ओतप्रोत था। वे सही अर्थों में एक सच्चे देशभक्त व सच्चे साहित्यकार थे। उन्होंने अपने समय की राजनैतिक व सामाजिक विद्रूपताओं को स्वयं भोगा और महसूस किया और उसे अपने साहित्य में भी उकेरा। वे राजनीति के दोहरे मानदंडों व दोगलेपन के खिलाफ निडरता से अपनी बात कहते थे। वे किसी भी सत्ताधारी या सत्तापक्ष के उच्च पद पर आसीन व्यक्ति विशेष से भी नहीं डरते थे। दुष्यन्त जी चाहते तो अपनी साहित्यिक प्रतिभा को कभी भी सरकार के किसी भी खजाने से अपने समकक्ष अन्य साहित्यकारों की भांति भुना सकते थे। परन्तु उन्होंने ऐसा कभी नहीं किया वे सरकार, मंत्री या उच्च पद पर आसीन व्यक्ति विशेष की चाटुकारिता करने में विश्वास नहीं रखते थे। बल्कि गलत कार्य और व्यक्ति का विरोध करने में हिचकिचाते नहीं थे। अपनी क़लम से या मौखिक व्यवहार द्वारा उसके प्रति अपना विरोध निडरता पूर्वक दर्शाते थे। चाहे इस बात का खामियाजा उन्हें बाद में भुगतना ही क्यों ना पड़े। वे अपनी बात कहने को प्राथमिकता देते थे, उसके असर की परवाह नहीं करते थे।

दुष्यंत कुमार सामाजिक सरोकारों के कवि रहे हैं। आम आदमी के जीवन में आने वाली तकलीफों, उत्तार–चढ़ाव, गरीबी के दर्द को न केवल झेला परन्तु उस पीड़ा को पूरी शिद्दत से महसूस भी किया था। दुष्यन्त कुमार ने अपने साहित्य में आम आदमी के जीवन की वास्तविकता का सटीक चित्रण प्रस्तुत किया है। जिस मानवीयता की ज्योति को वे अपने भीतर प्रज्वलित किये हुए थे, उसका प्रकाश उन अँधेरों को और नुमायाँ करता था जो कि उनके आसपास के व्यावहारिक जीवन व आम आदमी के जीवन में बिखरा हुआ था। दुष्यन्त आपातकाल के जकड़न भरे समय में अपनी वे ग़ज़लें कह रहे थे, जिनके प्रकाशन पर प्रशासन व व्यवस्था की कूँची काली स्याही फेरने के लिए तत्पर थी। परन्तु वे फिर भी ना डरे, ना रूके और आम जीवन की वास्तविकता व प्रशासन व सत्ता की वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करते रहे।

अपाहिज व्यथा को वहन कर रहा हूँ,
तुम्हारी कहन थी कहन कर रहा हूँ।

दुष्यन्त कुमार आम आदमी की पीड़ा और व्यथा को उद्घाटित करते हुए कहते हैं कि जो दर्द व तकलीफ आम आदमी झेल रहा है उस पीड़ा को उतनी ही शिद्दत से मैंने भी महसूस किया है। दुष्यन्त आम आदमी की करूण व्यथा को महसूस करते हुए लिखते हैं कि आम आदमी इतना लाचार और अपाहिज है, कि अपनी व्यथा को व्यक्त करना भी उसके वश में नहीं है। इसलिए मैं उनकी व्यथा को व्यक्त करने का माध्यम बना हूँ। कवि कहता है कि जो उद्गार आम व्यक्ति को व्यक्त करने चाहिए या कहने चाहिए वो वे स्वयं कह रहे हैं।

खड़े हुए थे अलावों की आँच लेने को,
सब अपनी–अपनी हथेली जला के बैठ गए।

दुष्यन्त कुमार अपने ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' की ग़ज़लों में आम जीवन की वास्तविकताओं और विसंगतियों को भावना की इतनी ऊँचाई पर ले जाकर बयाँ करते हैं कि उनके बीच से हमें आम आदमी के जीवन के दु:खदायी व कष्टप्रद होने के असली कारण दिखलाई देने लगते हैं। कवि कहता है कि आम आदमी को दैनिक व निम्नतम स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी साधन एवं संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। साहित्यिक प्रतीकों का उपयोग करते हुए दुष्यन्त कुमार लिखते हैं कि आम आदमी पास ठंड से

ठिठुरे हुए हाथों को अलावों पर सेंक लेने की सुविधा भी नहीं है। मानवीय संवेग यहाँ तक अँधरे हो चुके हैं कि ठिठुरते आदमी की ठंड से रक्षा होने की जगह उसकी हथेलियाँ तक झुलस जाती है। जब मध्यवर्ग व उच्च वर्ग के हाथों में ही परिवर्तन की बागडोर समझ ली जाती है तभी ऐसा मतिभ्रम पैदा होता है। कवि कहता है कि उच्च वर्ग शराफत की आड़ में आम आदमी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करता है और आम आदमी इसे अपनी नियति मान सहन करता चला जाता है।

कहीं वे धूप की चादर बिछाके बैठ गए,
कहीं वे शाम सिरहाने लगा के बैठ गए।

दुष्यन्त कुमार 'साये में धूप' के माध्यम से आम जन–जीवन की वास्तविकता का उद्‌घाटन करते हुए कहते हैं कि समाज में आर्थिक एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर अमीर व गरीब के बीच एक गहरी खाई और फासला होता है। धनाढ्य वर्ग एवं सत्ताधारी वर्ग के लोग जो कि जन सेवा का दंभ भरते हैं वे केवल अपनी सेवा करवाते हैं। अपने स्वार्थ साधने व जनता का खून चूसने के अलावा उनका अन्य कोई रूप दिखाई नहीं पड़ता। कवि ऐसे शोषक व सामन्तवादी वर्ग के खिलाफ आम जनता की आवाज बन विद्रोह करते हैं। वे उस मजदूर व गरीब वर्ग के पक्षधर बन जाते हैं, जिनके नसीब में धूप की चादर बिछाकर बैठ जाना ही लिखा होता है। तपती दोपहरी की तपिश से बचने के लिए उनके पास कोई भी साधन या संसाधन नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में वे खुले आकाश के नीचे धूप की चादर को ही अपना बिछौना बना बैठ जाने को ही अपनी नियति मान लेते हैं। कवि कहता है मजदूर वर्ग जो दिन भर के परिश्रम से चूर होकर व साधनों के अभाव में शाम की शीतलता का आसरा लेकर उसी को सिरहाने लगाकर बैठ जाने व सो जाने को अभिशप्त हैं। दुष्यन्त आम जीवन की वास्तविकता का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

जले जो रेत में तलुवे तो हमने ये देखा,
बहुत से लोग वहीं छटपटाके बैठ गए।

दुष्यन्त कुमार सामन्तशादी के शोषण के शिकार मजदूर वर्ग के जीवन की विवशता व लाचारी का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि दिन–रात मेहनत करने वाला आम आदमी व गरीब व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं व वस्तुओं की पूर्ति भी मुश्किल से कर पाता है। नितान्त अभावों में जीवन–यापन करने की विवशता पर प्राकृतिक आपदाओं या मौसमी बदलावों की मार कोढ़ में खाज का काम करती है। कवि सूर्य की किरणों से निकलती आग में तपती रेत पर नंगे पाँव चलने की लाचारी को चित्रित करते हुए आम आदमी की पीड़ा का मार्मिक वर्णन करते हैं। दुष्यन्त कहते हैं कि गरीब व्यक्ति तपती रेत पर नंगे पाँव चलने को विवश होता है परन्तु जब उसके तलवे जलते हैं तो वह तपिश के मारे छटपटाकर वहीं बैठ भी जाता है। कवि कहता है कि गरीब हर विकट परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार तो रहता है परन्तु है तो आखिर आम आदमी ही। वह भी एक दिन इन विकट हालातों के समक्ष घुटने टेकन को मज़बूर हो जाता है।

सिर से सीने में कभी, पेट से पावों में कभी,
एक जगह हो तो कहें दर्द इधर होता है।

दुष्यन्त कुमार अपने ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' के अन्तर्गत आम आदमी के जीवन की वास्तविकता को उदघाटित करते हैं। वे कहते हैं कि आम आदमी जीवन के हर पहलू से दुःखी व पीड़ित होता है। किसी व्यक्ति के कोई एक रोग हो तो उसे ढूँढना व उसका ईलाज कर पाना संभव होता है। परन्तु यदि मर्ज सम्पूर्ण शरीर में ही फैल जाये तो उसका पता लगा पाना और समाधान निकालना मुश्किल हो जाता है। कवि कहता है कि आम आदमी के दुःख दर्द और उसकी व्यथा इतनी अधिक होती है कि वह कभी सिर में होती है तो कभी सीने में हो जाती हैं। पेट से पाँवों में आने में समय नहीं लगता। ऐसी स्थिति में यह कह पाना भी दुश्वार हो जाता है कि आखिर दर्द कहाँ हो रहा हैं। दुष्यन्त उस स्थिति को बयाँ करते हैं जिसमें आम आदमी अभावों में जीवन जीने को लाचार होता है और संसाधनों की कमी से उसे अपने मर्ज़ की दवा व उपचार (अभाव की पूर्ति) समय पर हो पाना असंभव प्रतीत होता है।

लोग कहते थे कि ये बात नहीं कहने की,
तुमने कह दी है तो कहने की सज़ा लो यारो।

दुष्यन्त कुमार यहाँ पर आम आदमी की उस विवशता व लाचारी को व्यक्त करते हैं जिसे संविधान द्वारा 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रत्येक भारतीय नागरिक को प्रदान तो की गई है परन्तु संविधान के रक्षक बनने काम दंभ भरने वाले सत्ताधारियों, राजनीतिज्ञों और भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा आम आदमी के इस मौलिक अधिकार का हनन किया जाता है। यहाँ दिखावे के लिए व कहने भर को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है जबकि वास्तविकता इसके उलट होती है। कवि स्वयं भी आम आदमी के साथ ही इस अधिकार के हनन का शिकार होते हुए अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहता है कि हमारे देश में गरीब को तो सच बोलने की इजाजत भी नहीं होती है। यदि वह प्रशासन की तानाशाही के विरूद्व कुछ कहना भी चाहे तो उसे इसकी सज़ा भी दी जाती है साथ ही उसका मुहँ बंद करने के सभी प्रयास किये जाते हैं। दुष्यन्त भी जब आपातकाल के विकट समय में प्रशासन व सत्ता के तानाशाही शासन के विरूद्व अपनी ग़ज़लों के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करने का जिम्मा उठाते हैं तो व्यवस्था की कूँची उनकी ग़ज़लों पर काली स्याही पोतने के लिए तत्पर होती है। कवि ने अपने साहित्य में आम आदमी की पीड़ा को उजागर किया और ना सिर्फ बेजुबान व लाचार समाज को वाणी प्रदान की अपितु उनकी सुषुप्त व निष्प्राण चेतना को भी जगाने का प्रयास किया है।

इस प्रकार दुष्यन्त आम जीवन की वास्तविकता व लाचारी को सटीक उद्धरणों के द्वारा चित्रित करते हैं और समाज को अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत करते हैं। दुष्यंत कुमार सामाजिक सरोकारों के कवि रहे हैं। आम आदमी के जीवन में आने वाली तकलीफों, उत्तार–चढ़ाव, गरीबी के दर्द को न केवल झेला परन्तु उस पीड़ा को पूरी शिद्दत से महसूस भी किया था। आम आदमी के दर्द व पीड़ा को उन्होंने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया। दुष्यन्त कुमार ने अपने साहित्य में आम आदमी के जीवन की वास्तविकता का सटीक चित्रण प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची
1.दुष्यन्त कुमार रचनावली भाग–2, (सम्पादक)– विजय बहादुर सिंह, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण : 2008
2.हमारे लोकप्रिय गीतकार दुष्यन्त कुमार, (सम्पादक)– शेरजंग गर्ग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
3.साये में धूप–दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली : 2005
4.दुष्यन्त कुमार का रचना संसार – डॉ. माधुरी साहू, प्रियांशी प्रकाशन, लखनऊ : 1995
5.ग़ज़ल......दुष्यंत के बाद भाग–2, (संपादक) – दीक्षित दनकौरी, (संकलन)–मोईन अख़्तर अंसारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006

कृष्णा कुमारी शर्मा
शोध छात्रा , हिन्दी विभाग , वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org